

प्रधानमंत्री कार्यालय

# प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में सामाजिक अधिकारिता शिविर में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 29 FEB 2020 3:00PM by PIB Delhi

भाइयों और बहनो,

तीर्थराज, प्रयागराज में आकरके हमेशा ही एक अलग पवित्रता और ऊर्जा का एहसास होता है। मुझे याद है, पिछले साल फरवरी में, लगभग यही समय था, जब मैं कुंभ के दौरान इस पवित्र धरती पर आया था। तब संगम पर स्नान करके और उसके साथ-साथ मुझे एक और सौभाग्य भी मिला था। वो सफाई कर्मचारी, जो ऐतिहासिक कुंभ की पवित्रता बढ़ा रहे थे, और जिनके परिश्रम और पुरूषार्थ के कारण पूरे विश्व में प्रयागराज के इस कुंभ की स्वच्छता की पूरी दुनिया में चर्चा हुई, पुरी दुनिया में प्रयागराज की एक नई पहचान बनी, कुंभ में एक नई परंपरा नजर आई और उसे सफल करने वाले उन सफाई कर्मचारियों को, उनके पैर धोने का, उनके चरण धोने का, और मुझे इस महान सिद्धिको पाने वाले उन सफाई कर्मचारियों को नमन करने का अवसर मिला था।

अब आज भी कुछ वैसा ही सौभाग्य मुझे आज मां गंगा के किनारे इस पवित्र धरती प्रयागराज में फिर से एक बार प्राप्त हुआ है। आपके प्रधान सेवक के तौर पर, मुझे हजारों दिव्यांग-जनों और बुजुर्गों, वरिष्ठ जनों की सेवा करने का और उनके आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला है।

थोड़ी देर पहले यहां करीब 27 हजार साथियों को उपकरण दिए गए हैं। किसी को ट्रायसाइकिल मिली है, किसी को सुनने की मशीन मिली है, किसी को व्हीलचेयर मिली है।

मुझे बताया गया है कि यहां इस सामाजिक आधिकारिता शिविर में अनेक रिकॉर्ड भी बन रहे हैं। ये उपकरण, आपके जीवन से मुश्किलें कम करने में कुछ मदद करेंगे। और मैं मानता हूं कि ये उपकरण आपके बुलंद हौसलों के सहयोगी भर हैं। आपकी असली शक्ति तो आपका धैर्य है, आपका सामर्थ्य है, आपका मानस है। आपने हर चुनौति को चुनौति दी है। आपने मुश्किलों को मात कर दिया है। आपका जीवन अगर कोई बारीकी से देखे तो हर पल हर डगर हर किसी के लिए प्रेरणा का कारण है। मैं आज आप सभी दिव्यांगजनों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

साथियों,

हमारे यहां कहा जाता है-

**स्वस्ति: प्रजाभ्यः, स्वस्ति: प्रजाभ्यः परिपालयतां न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः!**

यानि सरकार का ये दायित्व है कि हर व्यक्ति का भला हो, हर व्यक्ति को न्याय मिले। यही सोच तो सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मंत्र का भी आधार है। इसी सोच के साथ हमारी सरकार, समाज के हर व्यक्ति के विकास के लिए, उसके जीवन को आसान बनाने के लिए काम कर रही है। चाहे वो वरिष्ठ जन हों, दिव्यांगजन हों, आदिवासी हों, पीड़ित, शोषित, वंचित हों, 130 करोड़ भारतीयों के हितों की रक्षा करना, उनकी सेवा करना, हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। विशेषकर, दिव्यांगजनों की तकलीफों को जिस तरह इस सरकार ने समझा है, उनके लिए जिस संवेदनशीलता से काम किया है, उतना पहले कभी नहीं किया गया। आप भी याद करिए, मेरे दिव्यांग भाई-बहनों को पहले यहां-वहां के दफ्तरों में हफ्तों तक चक्कर लगाना पड़ता था, तब जाकर थोड़ी-बहुत जरूरी मदद उन्हें मिल पाती थी। आपकी तकलीफ, आपकी समस्या, जिस गंभीरता से सुनी जानी चाहिए थी, उस पर ध्यान

ही नहीं दिया गया। दिव्यांग भाई-बहनों को बेसहारा छोड़ देने वाली पहले की स्थिति हमें स्वीकार नहीं थी। हमने आपके साथी बनकर, सेवक बनकर, आपकी एक-एक दिक्कतों के बारे में सोचा, और उन्हें दूर करने का प्रयास किया है।

साथियों,

पहले की सरकारों के समय, इस तरह के कैंप बहुत ही कम लगा करते थे। और इस तरह के मेगा कैंप तो गिनती के भी शायद नहीं होते थे। बीते 5 साल में हमारी सरकार ने देश के अलग-अलग इलाकों में करीब 9 हजार कैंप लगवाए हैं।

भाइयों और बहनों,

पिछली सरकार के पाँच साल में जहां दिव्यांगजनों को 380 करोड़ रुपए से भी कम के उपकरण बांटे गए, वहीं हमारी सरकार ने 900 करोड़ रुपए से ज्यादा के उपकरण बांटे हैं। यानि करीब-करीब ढाई गुना। जब गरीब के लिए, दिव्यांग के लिए मन में पीड़ा होती है, सेवा का भाव होता है, तब इस तरह की गति आती है, तब इतनी तेजी से काम होता है।

साथियों,

आप वो समय भी याद करिए जब सरकारी इमारतों में जाने के लिए, बस स्टैंड, अस्पताल, कोर्ट, कचहरी, हर जगह आने-जाने में आपको दिक्कत होती थी। कुछ जगहों पर अलग रैंप बन जाता था, बाकी जगहों पर बहुत मुश्किल होती थी। ये हमारी ही सरकार है जिसने सुगम्य भारत अभियान चलाकर देशभर की बड़ी सरकारी इमारतों को दिव्यांगों के लिए सुगम्य बनाने का संकल्प लिया। बीते चार-पाँच वर्षों में देश की सैकड़ों इमारतें, 700 से ज्यादा रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, दिव्यांगजनों के लिए सुगम्य बनाई जा चुकी हैं। जो बची हुई हैं, उन्हें भी सुगम्य भारत अभियान से जोड़ा जा रहा है। इतना ही नहीं, जो नई इमारतें बन रही हैं, या रेलवे के नए कोच हैं, उनमें पहले से ही ध्यान रखा जा रहा है कि वो आपके लिए दिव्यांगजनों के लिए अनुकूल हों।

भाइयों और बहनों,

एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने पर, अलग-अलग भाषा होने की वजह से भी मेरे दिव्यांग भाई-बहनों को बहुत दिक्कत होती थी। पहले ये सभी सोचा ही नहीं गया कि दिव्यांगों के लिए भी एक कॉमन साइन लैंग्वेज हो। इसके लिए भी प्रयास हमारी ही सरकार ने शुरू किया। देशभर के सभी दिव्यांगों के लिए एक कॉमन साइन लैंग्वेज हो, इसके लिए सरकार ने **इंडियन साइन लैंग्वेज रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर** की स्थापना की है। अभी यहां मेरे भाषण के साथ-साथ यहां पर मंच में दिव्यांगजनों के लिए साइन के द्वारा भाषण बताया जा रहा है। पहले स्थिति ये थी कि एक आदम राज्य के बच्चे ये समझ पाते थे। अब ये नई व्यवस्था के कारण तमिलनाडु का व्यक्ति भी इस लैंग्वेज का समझ सकता है। अब ये काम भी 70 साल तक किसी को करने की फुरसत नहीं थी लेकिन जब दिव्यांग के प्रति संवेदना हो, हिंदुस्तान के एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को और मजबूत करने का इरादा हो तब जाकरके ऐसे काम होते हैं। और अब इस सेंटर ने करीब 6000 कॉमन शब्दों की एक डिक्शनरी तैयार भी कर ली है।

यानि आने वाले समय में, अगर प्रयागराज से मेरा कोई दिव्यांग साथी, अगर चेन्नई में जाएगा, या पश्चिम बंगाल जाएगा तो उसको भाषा की उतनी परेशानी नहीं होगी। यही नहीं, करीब 400 से अधिक सरकारी वेबसाइट्स को, और हमारी जो करन्सी है, सिक्के हों या हमारी नोट हो उसको भी दिव्यांगों के लिए अनुकूल बनाया गया है। वह आसानी से तय कर सकता है एक रूपए की नोट है, पांच रूपए की नोट है, पांच सौ की नोट है, दो सौ की नोट है, वह आराम से तय कर सकता है, सिक्के के विषय में भी तय कर सकता है कि सिक्का कौन सा है।

और अब तो आप भी देख रहे होंगे कि प्राइवेट टीवी चैनल भी दिव्यांगों के हिसाब से खबरें दिखाने लगे हैं, कार्यक्रम दिखाने लगे हैं। मैं इन सभी चैनलों को, जिन्होंने दिव्यांगजनों के लिए यह समाचार सुविधा की है उनको बधाई देता हूं। दूरदर्शन के लोग अनेक अभिनंदन के अधिकारी हैं क्योंकि उन्होंने तो सालों से इस काम को किया है और

उन्होंने दिव्यांगजनों की चिंता की है। लेकिन अब देश के कई टी वी चैनल दिव्यांगजनों के लिए भी इस प्रकार के साइनेदित के द्वारा खबरें दिखाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। मानवीय संवेदना के इस काम के लिए वे सभी टी वी चैनल भी अभिनंदन के अधिकारी हैं।

भाइयों और बहनों,

हमारी सरकार ने दिव्यांगजनों के लिए जिस सेवाभाव से काम किया है, फैसले लिए हैं, उसकी चर्चा जितनी होनी चाहिए थी, उतनी हो नहीं पाई। प्रयागराज तो इंसाफ की भी नगरी है, न्याय की नगरी है, सामान्य जन के अधिकारों की रक्षा के लिए हजारों लोग यहां दिन-रात काम करते हैं।

साथियों,

ये हमारी ही सरकार है जिसने पहली बार दिव्यांगजनों के अधिकारों को स्पष्ट करने वाला कानून लागू किया। इस कानून का एक बहुत बड़ा लाभ ये हुआ है कि पहले दिव्यांगों की जो 7 अलग-अलग तरह की कैटेगरी होती थी, उसे बढ़ाकर 21 कर दिया गया। यानि हमने इसका दायरा बढ़ा दिया। इसके अलावा दिव्यांगों पर अगर कोई अत्याचार करता है, कोई मजाक उड़ाता है, उन्हें परेशान करता है, तो इससे जुड़े नियमों को भी सख्त किया गया है।

साथियों,

ये भी हमारी ही सरकार है जिसने न सिर्फ दिव्यांगों की नियुक्ति के लिए विशेष अभियान चलाए, बल्कि सरकारी नौकरियों में उनका आरक्षण बढ़ाकर, दिव्यांगजनों के लिए, 3 प्रतिशत से बढ़ा करके अब 4 प्रतिशत कर दिया गया है। इतना ही नहीं, उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिले के लिए भी उनका आरक्षण 3 प्रतिशत से बढ़ाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है।

अपने दिव्यांग साथियों का कौशल विकास भी हमारी प्राथमिकता रही है। सरकार ने 2 लाख साथियों को स्किल ट्रेनिंग दी है और अब 5 लाख दिव्यांग साथियों को स्किल ट्रेनिंग देने का लक्ष्य है।

भाइयों और बहनों,

नए भारत के निर्माण में हर दिव्यांग युवा, दिव्यांग बच्चे की उचित भागीदारी बहुत आवश्यक है। चाहे वो उद्योग हों, सेवा का क्षेत्र हो या फिर खेल का मैदान, दिव्यांगों के कौशल को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जितने भी दिव्यांगों से जुड़ी खेल स्पर्धाएं हुई हैं, उनमें भारत का प्रदर्शन हमारे दिव्यांग साथियों ने हिन्दुस्तान का नाम दुनिया में रोशन किया है, उनका प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। आप कल्पना कर सकते कितनी बड़ी मजबूत संकल्प शक्ति होगी तब जाके दुनिया के मैदान में भी मेरे देश के दिव्यांगजन भारत का तिरंगा फहरा करके आते हैं। दिव्यांगों के इस कौशल को और निखारने के लिए मध्य प्रदेश के ग्वालियर में एक स्पोर्ट्स सेंटर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है।

इस सेंटर में ट्रेनिंग, सेलेक्शन, पढ़ाई-लिखाई, रिसर्च, मेडिकल सुविधाएं, यानि नेशनल और इंटरनेशनल मुकाबलों के लिए जो भी तैयारियां चाहिए उनकी सुविधा हमारे दिव्यांग जनों को यहां दी जाएगी।

साथियों,

हमारे देश में ढाई करोड़ से अधिक दिव्यांग हैं तो 10 करोड़ से अधिक सीनियर सिटिजन हमारे वरिष्ठ नागरिक भी हैं। एक आयुके बाद सुविधा के अनेक उपकरणों की जरूरत हमारे इन वरिष्ठ नागरिकों को होती है, इन सीनियर सिटिजन्स को होती है। किसी को चलने में दिक्कत, किसी को सुनने में दिक्कत। सीनियर सिटिजन्स के जीवन से इस परेशानी को कम करने के लिए हम लगातार काम कर रहे हैं।

गरीब वरिष्ठ नागरिकों को भी जरूरी उपकरण मिलें, इसके लिए हमारी सरकार ने तीन साल पहले **‘राष्ट्रीय वयोश्री योजना’** **‘राष्ट्रीय वयोश्री योजना’** इसकी शुरुआत की थी।

इस योजना के तहत करीब सवा लाख सीनियर सिटिजन्स को जरूरी उपकरण दिए जा चुके हैं। वयोश्री योजना के तहत आज यहां भी अनेक हमारे सीनियर सिटिजन्स को, बुजुर्गों को उपकरण देने का सौभाग्य और उनके आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य आज इस पवित्र नगरी में मुझे मिला है।

भाइयों और बहनों,

60 वर्ष की आयु के बाद, बुजुर्गों को एक निश्चित राशि पर, एक निश्चित ब्याज मिले, उनका निवेश सुरक्षित रहे, इसके लिए हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री **वय वंदना योजना** भी शुरू की थी। इसका मकसद यही था कि अगर बाजार में ब्याज दरें कम हो जाएं, तो इसका प्रभाव उन पर कम से कम पड़े।

आप में से अनेक लोग ये जानते हैं कि मासिक पेंशन का विकल्प चुनने पर वरिष्ठ नागरिकों को इस स्कीम में 10 साल तक एक तय दर से गारंटीशुदा पेंशन मिलती है। मैं आज यहां पर एक और बात भी आप लोगों को बताना चाहूंगा। सामान्य रूप से हमारे सीनियर सिटिजन या जिनको पेंशन मिलती है ऐसे नागरिक, सैलेरी क्लास रिटायरमेंट के बाद अपने पैसे बैंक में जमा कर देते हैं और जमा करने के बाद उसके ब्याज से अपना गुजारा चलाते हैं। लेकिन कभीकभी बैंकों में संकट आ जाता है। बैंक डूब जाते हैं। कोई कारोबारी धोखा कर देते हैं। और कभीकभी हमारे इन सीनियर सिटिजन्स के मेहनत की कमाई के पैसे डूब जाते हैं।

इस बार पार्लियामेंट में गरीबों की चिंता करने वाली, बुजुर्गों की चिंता करने वाली, सीमित आय में जीवन गुजारा करने वाले मेरे देश के भाइयों बहनों के लिए हमने एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। इस देश का दुर्भाग्य है कि बहुत लोग ऐसी बातों की चर्चा न हो इसके लिए बड़े सजग रहते हैं। इतना बड़ा निर्णय किया है जिसकी मांग सालों से होती थी। पहले अगर बैंक में आपके 10 लाख रूपए हैं, 2 लाख रूपए हैं, 5 लाख रूपए हैं, अगर बैंक डूब गई तो आपको 1 लाख रूपए से ज्यादा कुछ भी नहीं मिलता था। हमने नियम बदल दिया और अब 1 लाख की जगह पर 5 लाख कर दिया। इसका मतलब हुआ कि करीबकरीब 99 परसेंट जिनके पैसे बैंकों में होते हैं वो सुरक्षित हो गए। अब उनके प्रति कोई संकट नहीं आएगा। ये काम इस बजट में हमने कर दिया है और इसके कारण बैंकों के प्रति विश्वास भी बढ़ेगा, इसके कारण सामान्य व्यक्ति अपने पैसे कहीं साहूकार के यहां रखने के बजाय बैंक में रखने के लिए आगे आएगा।

भाइयों बहनों

ऐसे अनेक कदम हैं। उसी प्रकार से पेंशन के विषय में, इंश्योरेंस के विषय में पहले पॉलिसी बहुत कम अवधि के लिए खुलती थी, लेकिन 2018 में इसको 31 मार्च 2020 तक बढ़ा दिया गया। सिर्फ अवधि ही नहीं बढ़ाई बल्कि मासिक पेंशन को भी 10 हज़ार रूपए प्रतिमाह कर दिया गया है। मुझे संतोष है कि आज इस योजना का लाभ सवा तीन लाख से ज्यादा सीनियर सिटिजन उठा रहे हैं।

साथियों,

परिवार के साथ-साथ बुजुर्गों का ध्यान रखने का दायित्व समाज का भी है, सरकार भी है। इसी दायित्व बोध को समझते हुए, पूरी संवेदनशीलता के साथ हमारी सरकार काम कर रही है, योगी जी की सरकार काम कर रही है। जिन लोगों ने अपना पूरा जीवन अपने परिवार और देश को आगे बढ़ाने में लगाया है, उन्हें किसी भी तरह की परेशानी न हो, इसका हम पूरा ध्यान रख रहे हैं।

बीते कुछ समय में सरकार ने जो फैसले लिए हैं, जो अन्य योजनाएं शुरू की हैं, उनसे भी उन्हें लाभ हो रहा है। बीते 5 साढ़े 5 वर्षों में वरिष्ठ जनों के इलाज का खर्च पहले की अपेक्षा, बहुत कम हुआ है।

जनऔषधि केंद्रों में तमाम दवाइयों की कीमत बहुत कम हुई है। वहीं हार्ट स्टेंट और घुटनों के ऑपरेशन से जुड़ा सामान 70-80 प्रतिशत तक सस्ता किया गया है। सीनियर सिटिजंस को टैक्स से लेकर दूसरे निवेश तक में, हर संभव सुविधाएं दी जा रही हैं। इतना ही नहीं, देश के इतिहास में पहली बार करीब-करीब हर गरीब के लिए 60 वर्ष

की आयु के बाद के लिए पेंशन योजना का प्रावधान किया गया है। देश के असंगठित क्षेत्र के करोड़ों श्रमिक हों या फिर मेरे किसान- मेरे खेत मज़दूर छोटे व्यापारी हों या छोटे दुकानदार, सभी के लिए सरकार ने अलग-अलग पेंशन योजनाएं शुरू की हैं। इसका बहुत बड़ा लाभ गरीबों को 60 वर्ष की आयु होने के बाद भी मिलेगा।

साथियों,

आयुष्मान भारत योजना के तहत 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा हो या फिर बीमा योजनाएं, उनका भी लाभ गरीबों को, दिव्यांगजनों को, सीनियर सिटिजन्स को अलग से हो रहा है।

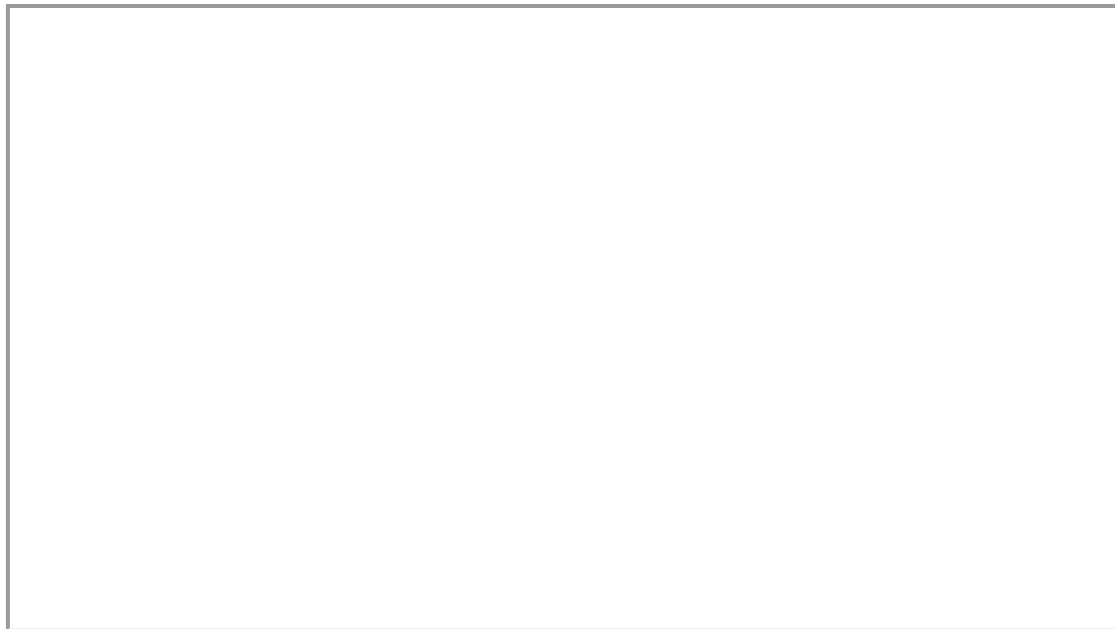
गरीब से गरीब देशवासी भी बीमा की सुविधा से जुड़े इसके लिए 2-2 लाख रुपये के बीमा की दो योजनाएं चल रही हैं। प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत 1 रुपये प्रति महीना यानी महीना का सिर्फ 1 रूपया और प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना के तहत एक दिन का 90 पैसा उतने कम प्रीमियम में उनका इंश्योरेंस निकाला जा रहा है। अभी तक 24 करोड़ से ज्यादा हमारे साथी इन दोनों योजनाओं से जुड़ चुके हैं और मुश्किल समय में उन्हें 4 हजार करोड़ रुपये से अधिक का क्लेम भी इन परिवारों तक पहुंच चुका है।

साथियों,

आपसे बात करते हुए, शुरुआत में मैंने एक श्लोक का जिक्र किया था जिसमें शासन के दायित्वों की बात थी। उसी मंत्र का आखिरी हिस्सा है- **लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥**

यानि, जगत के अंदर, समाज का हर वर्ग, हर नागरिक, हर कोई सुखी हो, इसी कामना के साथ, मैं फिर एक बार सभी सीनियर सिटिजन्स को प्रणाम करते हुए, सभी दिव्यांगजनों की संकल्पशक्ति को नमन करते हुए, इस महान पवित्र अवसर को, मेरे लिए ये दिव्यांगजनों का कुंभ भी बहुत पवित्र है, सेवा भाव से भरा हुआ है। इस अवसर पर मैं भारत सरकार के इस विभाग को भी, राज्य सरकार के प्रयासों को भी बहुत ही गौरवपूर्ण रूप से याद करते हुए, आप सब को नमन करते हुए, अनेक अनेक शुभकामनाएं देते हुए, मेरी बात को समाप्त करता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद !!! मेरे साथ पूरी ताकत से बोलें भारत माता की... जय। भारत माता की... जय। भारत माता की... जय। बहुत-बहुत धन्यवाद !!!



\*\*\*\*\*

VRRK/KP

(रिलीज़ आईडी: 1604815) आगंतुक पटल : 195

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Marathi , Bengali , Punjabi , Gujarati

प्रधानमंत्री कार्यालय

# असम के कोकराझार में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 07 FEB 2020 6:30PM by PIB Delhi

भारत माता की जय....

भारत माता की जय....

भारत माता की जय....

मंच पर विराजमान असम के राज्यपाल, संसद में मेरे साथी, विभिन्न बोर्ड और संगठनों से जुड़े नेतागण यहां उपस्थित NDFB के विभिन्न गुटों के साथीगण, यहां आए सम्मानीय महानुभव और विशाल संख्या में हमें आशीर्वाद देने के लिए आए हुए मेरे प्यारे भाईयो और बहनों।

मैं असम बहुत बार आया हूं। यहां पर भी आया हूं। इस पूरे क्षेत्र में मेरा यहां आना-जाना कई वर्षों से रहा, कई दशकों से रहा। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी बार-बार आपके दर्शन के लिए आता रहा हूं। लेकिन आज जो उत्साह, जो उमंग मैं आपके चेहरे पर देख रहा हूं, वो यहां के 'आरोनाई' और 'डोखोना' के रंगारंग माहौल से भी अधिक संतोष देने वाला है।

सार्वजनिक जीवन में, राजनीतिक जीवन में बहुत रैलियां देखी हैं, बहुत रैलियों को संबोधित किया है लेकिन जीवन में कभी भी इतना विशाल जनसागर देखने का सौभाग्य नहीं मिला था। जो लोग राजनीतिक जीवन के पंडित हैं, वो जरूर इसके विषय में कभी न कभी कहेंगे कि आजादी के बाद की हिंदुस्तान की सबसे बड़ी कोई Political Rally हुई तो आज ये विक्रम आपने प्रस्थापित कर दिया है, ये आपके कारण हुआ है। मैं हैलीकाप्टर से देख रहा था, हैलीकाप्टर से भी कहीं नजर पहुंचाओ लोग ही लोग दिख रहे थे। मैं तो देख रहा था उस ब्रिज पर कितने लोग खड़े हैं कहीं कोई गिर जाएगा तो मुझे दुख होगा इतने लोग खड़े हैं।

भाईयो और बहनों आप इतनी बड़ी तादाद में जब आशीर्वाद देने आए हैं, इतनी बड़ी तादाद में यहां की माताएं-बहनें आशीर्वाद देने आई हैं। तो मेरा विश्वास थोड़ा और बढ़ गया है। कभी-कभी लोग कहते हैं डंडा मारने की बातें करते हैं लेकिन जिस मोदी को इतनी बड़ी मात्रा में माताओं-बहनों का सुरक्षा कवच मिला हो उस पर कितने ही डंडे गिर जाए उसको कुछ नहीं होता। मैं आप सबको नमन करता हूं। माताओं-बहनों, मेरे भाईयो-बहनों, मेरे नौजवानों, मैं आज दिल की गहराई से आपको गले लगाने आया हूं, असम के मेरे प्यारे भाईयो-बहनों को एक नया विश्वास देने के लिए आया हूं। कल पूरे देश ने देखा है किस प्रकार से गांव-गांव आपने मोटर साइकिल पर रैलियां निकाली, पूरे क्षेत्र में दीप-दीए जलाकर के दिवाली मनाई। शायद दिवाली के समय भी इतने दीए जलते होंगे कि नहीं जलते होंगे वो मुझे आश्चर्य होता है। मैं कल देख रहा था सोशल मीडिया में भी चारों तरफ आपने जो दीए जलाए उसके दृश्य टीवी में, सोशल मीडिया में भरपूर नजर आ रहे थे। सारा हिंदुस्तान आप ही की चर्चा कर रहा था। भाईयो-बहनों, ये कोई हजारों, लाखों दीए जलाने की घटना नहीं है बल्कि देश के इस महत्वपूर्ण भू-भाग में एक नई रोशनी, नए उजाले की शुरुआत हुई है।

भाईयो-बहनों, आज का दिन उन हजारों शहीदों को याद करने का है, जिन्होंने देश के लिए अपने कर्तव्य पथ पर जीवन बलिदान किया। आज का दिन बोडोफा उपेंद्रनाथ ब्रह्मा जी, रूपनाथ ब्रह्मा जी, जैसे यहां के सक्षम नेतृत्व के योगदान को याद करने का है, उनको नमन करने का है। आज का दिन, इस



समझौते के लिए बहुत सकारात्मक भूमिका निभाने वाले All Bodo Students Union (ABSU), National Democratic Front of Bodoland (NDFB) से जुड़े तमाम युवा साथियों, BTC के चीफ श्री हगरामा माहीलारे और असम सरकार की प्रतिबद्धता आप सब न सिर्फ मेरी तरफ से अभिनंदन के अधिकारी हैं लेकिन पूरे हिंदुस्तान की तरफ से अभिनंदन के अधिकारी हैं। आज 130 करोड़ हिंदुस्तानी आपको बधाई दे रहे हैं। आपका अभिनंदन कर रहे हैं, आपका धन्यवाद कर रहे हैं।

साथियों, आज का दिन आप सभी बोडो साथियों का इस पूरे क्षेत्र, हर समाज और यहां के गुरुओं, बौद्धिकजनों, कला, साहित्यकारों के प्रयासों को celebrate करने का ये अवसर है। गौरवगान करने का अवसर है। आप सभी के सहयोग से ही स्थायी शांति का, permanent peace का ये रास्ता निकल पाया है। आज का दिन असम सहित पूरे नॉर्थ-ईस्ट के लिए 21वीं सदी में एक नई शुरुआत, एक नए सवेरे का, एक नई प्रेरणा को Welcome करने का अवसर है। आज का दिन संकल्प लेने का है कि विकास और विश्वास की मुख्यधारा को मजबूत करना है। अब हिंसा के अंधकार को इस धरती पर लौटने नहीं देना है। अब इस धरती पर किसी भी मां के बेटे का, किसी भी मां के बेटी का, किसी भी बहन के भाई का, किसी भी भाई की बहन का खून नहीं गिरेगा, हिंसा नहीं होगी। आज मुझे वो माताएं भी आशीर्वाद दे रही हैं। वो बहनें भी मुझे आशीर्वाद दे रही हैं जिनका बेटा जंगलों में कंधे में बंदूक उठाकर भटकता रहता था। कभी मौत के साए में जीता था। आज वो अपनी मां की गोद में अपना सर रखकर के चैन की नींद सो पा रहा है। मुझे उस मां के आशीर्वाद मिल रहे हैं, उस बहन के आशीर्वाद मिल रहे हैं। कल्पना कीजिए इतने दशकों तक दिन रात गोलियां चलती रही थी। आज उस जिंदगी से मुक्ति का रास्ता खुल गया है। मैं न्यू इंडिया के नए संकल्पों में आप सभी का, शांतिप्रिय असम का, शांति और विकास प्रिय नॉर्थ-ईस्ट का दिल की गहराइयों से स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं।

साथियों, नॉर्थ-ईस्ट में शांति और विकास का नया अध्याय जुड़ना बहुत ऐतिहासिक है। ऐसे समय में और ये बहुत ही सुखद संयोग है कि जब देश महात्मा गांधी जी का 150वां जयंती वर्ष मना रहा हो तब इस ऐतिहासिक घटना की घटना की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। और ये सिर्फ हिंदुस्तान की नहीं दुनिया के लिए हिंसा का रास्ता छोड़ करके अहिंसा का रास्ता चुनने के लिए एक प्रेरणा स्थल आज बनी है। महात्मा गांधी कहते थे कि अहिंसा के मार्ग पर चलकर हमें जो भी प्राप्त होता है वो सभी को स्वीकार होता है। अब असम में अनेक साथियों ने शांति और अहिंसा का मार्ग स्वीकार करने के साथ ही, लोकतंत्र को स्वीकार किया है, भारत के संविधान को सर आखों पर बिठाया है।

साथियों, मुझे बताया गया है कि आज जब कोकराझार में इस ऐतिहासिक शांति समझौते को सेलिब्रेट करने के लिए हम जुटे हैं, तब गोलाघाट में श्रीमंत शंकरदेव संघ का वार्षिक सम्मेलन भी चल रहा है।

**मोई मोहापुरुष श्रीमंतो होंकोर देवोलोई गोभीर प्रोनिपात जासिसु।**

**मोई लोगोत ओधिबेखोन खोनोरु होफोलता कामना कोरिलों !!**

(मैं महापुरुष शंकरदेव की जी को नमन करता हूं। मैं अधिवेशन की सफलता की कामना करता हूं।)

भाईयो और बहनों श्रीमंत शंकरदेव जी ने असम की भाषा और साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ पूरे भारत को, पूरे भारत को, पूरे विश्व को आदर्श जीवन जीने का मार्ग दिखाया।

ये शंकरदेव जी ही थे, जिन्होंने असम सहित पूरे विश्व को कहा कि-

**सत्य शौच अहिंसा शिखिबे समदम।**

**सुख दुख शीत उष्ण आत हैब सम ॥**



यानि सत्य, शौच, अहिंसा, शम, दम आदि की शिक्षा प्राप्त करो। सुख, दुख, गर्मी, सर्दी को सहने के लिए खुद को तैयार करो। उनके इन विचारों में व्यक्ति के खुद के विकास के साथ ही समाज के विकास का भी संदेश निहित है। आज दशकों बाद इस पूरे क्षेत्र में व्यक्ति के विकास का, समाज के विकास का यही मार्ग सशक्त हुआ है।

भाईयो और बहनों में बोडो लैंड मूवमेंट का हिस्सा रहे सभी लोगों का राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल होने पर बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। पाँच दशक बाद पूरे सौहार्द के साथ बोडो लैंड मूवमेंट से जुड़े हर साथी की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को सम्मान मिला है। हर पक्ष ने मिलकर स्थायी शांति के लिए समृद्धि और विकास के लिए हिंसा के सिलसिले पर पूर्णविराम लगाया है। मैं देश को ये भी जानकारी देना चाहता हूं क्योंकि मेरे प्यारे भाईयो और बहनों ये पूरा हिंदुस्तान इस अवसर को देख रहा है। सारे टीवी चैनल आज अपने कैमरा आप पर लगाए बैठे हैं। क्योंकि आपने एक नया इतिहास रचा है। हिंदुस्तान में एक नया विश्वास पैदा किया है। शांति के रास्ते को एक ताकत दी है आप लोगों ने।

भाईयो और बहनो, मैं आप सबको अभिनंदन देना चाहता हूं कि अब इस आंदोलन से जुड़ी प्रत्येक मांग समाप्त हो गई है। अब उसे पूर्णविराम मिल चुका है। 1993 में जो समझौता हुआ था, 2003 में जो समझौता हुआ था, उसके बाद पूरी तरह शांति स्थापित नहीं हो पाई थी। अब केंद्र सरकार, असम सरकार और बोडो आंदोलन से जुड़े संगठनों ने जिस ऐतिहासिक अकाँर्ड पर सहमति जताई है, जिस पर साइन किया है, उसके बाद अब कोई मांग नहीं बची है और अब विकास ही पहली प्राथमिकता है और आखिरी भी वही है।

साथियों, मुझ पर भरोसा करना मैं आपका, आपके दुख-दर्द, आपके आशा-अरमान, आपकी आकांक्षाएं, आपके बच्चों का उज्ज्वल भविष्य मुझसे जो सकेगा उसको करने में, मैं कभी पीछे नहीं हटूंगा। क्योंकि मैं जानता हूं बंदूक छोड़ करके, बम और पिस्तौल का रास्ता छोड़ करके जब आप लौट कर आए हैं, कैसी परिस्थितियों में आप आए होंगे ये मैं जानता हूं। अंदाज लगा सकता हूं और इसलिए इस शांति के रास्ते पर एक कांटा भी अगर आपको चुभ न जाए इसकी चिंता मैं करूंगा। क्योंकि ये शांति का रास्ता एक प्रेम का आदर का रास्ता, ये अहिंसा का रास्ता आप देखना पूरा आसाम आपके दिलों को जीत लेगा। पूरा हिंदुस्तान आपके दिलों को जीत लेगा। क्योंकि आपने रास्ता सही चुना है।

साथियों, इस अकाँर्ड का लाभ बोडो जनजाति के साथियों के साथ ही दूसरे समाज के लोगों को भी होगा। क्योंकि इस समझौते के तहत बोडो टैरिटोरियल काउंसिल के अधिकारों का दायरा बढ़ाया गया है, अधिक सशक्त किया गया है। इस समझौते में सभी की जीत हुई है और सबसे बड़ी बात है शांति की जीत हुई है, मानवता की जीत हुई है। अभी आपने खड़े होकर के, ताली बजा करके मेरा सम्मान किया, मैं चाहता हूं कि आप खड़े होकर के एक बार फिर ताली बजाएं, मेरे लिए नहीं, शांति के लिए मेरे लिए नहीं, शांति के लिए मैं आप सबका बहुत आभारी हूं।

अकाँर्ड के तहत BTAD में आने वाले क्षेत्र की सीमा तय करने के लिए कमीशन भी बनाया जाएगा। इस क्षेत्र को 1500 करोड़ रुपए का स्पेशल डेवलपमेंट पैकेज मिलेगा, जिसका बहुत बड़ा लाभ कोकराझार, चिरांग, बक्सा और उदालगुडि जैसे जिलों को भी मिलेगा। इसका सीधा मतलब कि है बोडो जनजाति के हर अधिकार का बोडो संस्कृति का विकास सुनिश्चित होगा, संरक्षण सुनिश्चित होगा। इस समझौते के बाद इस क्षेत्र में राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक हर प्रकार की प्रगति होने वाली है।

मेरे भाईयो और बहनों, अब सरकार का प्रयास है कि असम अकाँर्ड की धारा-6 को भी जल्द से जल्द लागू किया जाए। मैं असम के लोगों को आश्वस्त करता हूं कि इस मामले से जुड़ी कमेटी की रिपोर्ट आने के बाद केंद्र सरकार और त्वरित गति से कार्रवाई करेगी। हम लटकाने-भटकाने वाले लोग नहीं हैं।

हम जिम्मेवारी लेने वाले स्वभाव के लोग हैं। इसलिए अनेक सालों से आसाम की जो बात लटकी पड़ी थी, अटकी पड़ी थी, भटका दी गई थी उसको भी हम पूरा करके रहेंगे।

साथियों, आज जब बोडो क्षेत्र में, नई उम्मीदों, नए सपनों, नए हौसले का संचार हुआ है, तो आप सभी की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि Bodo Territorial Council अब यहां के हर समाज को साथ लेकर, कोई भेदभाव नहीं, सबको साथ लेकर विकास का एक नया मॉडल विकसित करेगी। मुझे ये जानकर भी प्रसन्नता हुई है कि असम सरकार ने बोडो भाषा और संस्कृति को लेकर कुछ बड़े फैसले लिए हैं और बड़ी योजनाएं भी बनाई हैं। मैं राज्य सरकार को हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन देता हूं। बोडो टेरिटोरियल काउंसिल, असम सरकार और केंद्र सरकार, अब तीनों साथ मिलकर, सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास को एक नया आयाम देंगे। भाईयो-बहनों इससे असम भी सशक्त होगा और एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना भी और मजबूत होगी।

साथियों, 21वीं सदी का भारत अब ये दृढ़ निश्चय कर चुका है कि अब हमें अतीत की समस्याओं में उलझकर नहीं रहना है। आज देश मुश्किल से मुश्किल चुनौतियों का समाधान चाहता है। देश के सामने कितनी ही चुनौतियां रही हैं जिन्हें कभी राजनीतिक वजहों से, कभी सामाजिक वजहों से, नजरअंदाज किया जाता रहा है। इन चुनौतियों ने देश के भीतर अलग-अलग क्षेत्रों में हिंसा, अस्थिरता, अविश्वास को बढ़ावा दिया है।

दशकों से देश में ऐसे ही चल रहा था। नॉर्थ ईस्ट का विषय तो ऐसा माना जाता था जिसे कोई हाथ लगाने के लिए भी तैयार नहीं था। आंदोलन हो रहे हैं, होने दो, ब्लॉकेड हो रहे हैं, होने दो, हिंसा हो रही है, किसी तरह काबू में कर लो, बस यही अप्रोच नॉर्थ ईस्ट के विषय में था। मैं मानता हूं कि इस अप्रोच ने उत्तर-पूर्व के हमारे कुछ भाई-बहनों को इतना दूर कर दिया था, .... इतना दूर कर दिया था कि उनका संविधान और लोकतंत्र में विश्वास खोने लगा था। बीते दशकों में नॉर्थ ईस्ट में हजारों निर्दोष मारे गए, हजारों सुरक्षाकर्मी शहीद हुए, लाखों बेघर हुए, लाखों कभी ये देख ही नहीं पाए कि विकास का मतलब क्या होता है। ये सच्चाई, पहले की सरकारें भी जानती थीं, समझती थीं, स्वीकार भी करती थीं लेकिन इस स्थिति में बदलाव कैसे हो, इस बारे में बहुत मेहनत कभी नहीं की गई। इतने बड़े इंज़ाट में कौन हाथ लगाए, जैसे चल रहा है चलने दो, यही सोचकर लोग रह जाते थे।

भाइयों और बहनों, जब राष्ट्रहित ही सर्वोपरि हो तो फिर परिस्थितियों को ऐसे ही नहीं छोड़ा जा सकता था। नॉर्थ ईस्ट का पूरा विषय संवेदनशील था इसलिए हमने नई अप्रोच के साथ काम करना शुरू किया। हमने नॉर्थ ईस्ट के अलग-अलग क्षेत्रों के भावनात्मक पहलू को समझा, उनकी उम्मीदों को समझा। यहां रह रहे लोगों से बहुत अपनत्व के साथ, उन्हें अपना मानते हुए संवाद कायम किया। हमने विश्वास पैदा किया। उन्हें पराया नहीं माना, न आपको पराया माना, न आपके नेताओं को पराया माना, अपना माना। आज इसी का नतीजा है कि जिस नॉर्थ ईस्ट में औसतन हर साल एक हजार से ज्यादा लोग उग्रवाद की वजह से अपनी जान गंवाते थे, अब यहां लगभग पूरी तरह शांति है और उग्रवाद समाप्ति की ओर है।

जिस नॉर्थ ईस्ट में लगभग हर क्षेत्र में Armed Forces Special Power Act लगा हुआ था, अब हमारे आने के बाद यहां त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश का ज्यादातर हिस्सा AFSPA से मुक्त हो चुका है। जिस नॉर्थ ईस्ट में उद्यमी निवेश के लिए तैयार नहीं होता था, Investment के लिए नहीं होता था। अब यहां निवेश होना शुरू हुआ है, नये उद्यम शुरू हुए हैं।

जिस नॉर्थ ईस्ट में उद्यमी निवेश के लिए तैयार नहीं होते थे, अब यहां निवेश होना शुरू हुआ है, नए उद्यम शुरू हुए हैं। जिस नॉर्थ ईस्ट में अपने-अपने होमलैंड को लेकर लड़ाइयां होती थीं, अब यहां एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना मजबूत हुई है। जिस नॉर्थ ईस्ट में हिंसा की वजह से हजारों लोग अपने ही

देश में शरणार्थी बने हुए थे, अब यहां उन लोगों को पूरे सम्मान और मर्यादा के साथ बसने की नई सुविधाएं दी जा रही हैं। जिस नॉर्थ ईस्ट में देश के बाकी हिस्से के लोग जाने से डरते थे, अब उसी को अपना Next Tourist Destination बनाने लगे हैं।

साथियों, ये परिवर्तन कैसे आया? क्या सिर्फ एक दिन में आया? जी नहीं। ये पाँच साल के अथक परिश्रम का नतीजा है। पहले नॉर्थ ईस्ट के राज्यों को Recipient के तौर पर देखा जाता था। आज उनको विकास के ग्रोथ इंजन के रूप में देखा जा रहा है। पहले नॉर्थ ईस्ट के राज्यों को दिल्ली से बहुत दूर समझा जाता था। पहले नॉर्थ ईस्ट के राज्यों को दिल्ली से बहुत दूर समझा जाता था, आज दिल्ली आपके दरवाजे पर आकर के आपके सुख दुख को ढूँढ रही है। और मुझे ही देखिए..... मुझे अपने बोडो साथियों से, असम के लोगों से बात करनी थी तो मैंने दिल्ली से बैठ कर संदेश नहीं भेजा बल्कि आपके बीच आकर आपकी आंखों में आंखे मिलाकर के, आपके आशीर्वाद लेकर के आज मैं आपसे जुड़ रहा हूँ। अपनी सरकार के मंत्रियों के लिए तो बाकायदा मैंने रोस्टर बनाकर हमने ये सुनिश्चित किया है कि हर 10-15 दिन में केंद्र सरकार का कोई न कोई मंत्री नॉर्थ ईस्ट अवश्य जाए। रात को रुकेगा, लोगो को मिलेगा, समस्याओं का समाधान करेगा। यहां आकर कर करेगा ये हमने करके दिखाया। हमारे साथियों ने प्रयास किया कि वो ज्यादा से ज्यादा समय यहां बिताएं, ज्यादा से ज्यादा लोगों से मिलें, उनकी समस्याएं समझें, सुलझाएं। मैं और मेरी सरकार निरंतर आपके बीच आकर, आपकी समस्याओं को जान रहे हैं, सीधे आपसे फीडबैक लेकर केंद्र सरकार की जरूरी नीतियां बना रहे हैं।

साथियों, 13वें वित्त आयोग के दौरान नॉर्थ ईस्ट के 8 राज्यों को मिलाकर 90 हजार करोड़ रुपए से भी कम मिलते थे। चौदहवें वित्त आयोग में हमारे आने के बाद ये बढ़कर लगभग 3 लाख करोड़ रुपए मिलना तय हुआ है। कहां 90 हजार और कहां 3 लाख करोड़ रुपया।

पिछले तीन-चार वर्षों में नॉर्थ ईस्ट में 3000 किलोमीटर से ज्यादा सड़कें बनाई गई हैं। नए नेशनल हाईवे स्वीकृत किए गए हैं। नॉर्थ ईस्ट के पूरे रेल नेटवर्क को ब्रॉडगेज में बदला जा चुका है। पूर्वोत्तर में नए एयरपोर्ट्स का निर्माण और पुराने एयरपोर्ट्स के मॉडर्नाइजेशन का काम भी तेजी से चल रहा है।

नॉर्थ ईस्ट में इतनी नदियां हैं, इतना व्यापक जल संसाधन है, नॉर्थ ईस्ट में इतनी नदियां हैं, इतना व्यापक जल संसाधन है, लेकिन 2014 तक यहां केवल एक वॉटर-वे था... एक। पानी से भरी हुई 365 दिन बहने वाली नदिया कोई देखने वाला नहीं था। अब यहां एक दर्जन से ज्यादा वॉटर-वे पर काम हो रहा है। पूर्वोत्तर के यूथ ऑफ एजुकेशन, स्किल और स्पोर्ट्स के नए संस्थानों से मजबूत करने पर भी ध्यान दिया गया है। इसके अलावा, नॉर्थ ईस्ट के students के लिए दिल्ली और बेंगलुरु में नए हॉस्टल्स बनाने का भी काम हुआ है।

साथियों, रेलवे स्टेशन हों, नए रेलवे रूट हों, नए एयरपोर्ट हों, नए वाटर-वे हों, या फिर Internet connectivity आज जितना काम नॉर्थ ईस्ट में हो रहा है। उतना पहले कभी नहीं हुआ। हम दशकों पुराने लटके हुए प्रोजेक्ट्स को पूरा करने के साथ ही, नए प्रोजेक्ट्स को भी तेज गति से पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। तेजी से पूरे होते ये प्रोजेक्ट्स नॉर्थ ईस्ट में कनेक्टिविटी सुधारेंगे, टूरिज्म सेक्टर मजबूत करेंगे और रोजगार के लाखों नए अवसर भी बनाएंगे। अभी पिछले ही महीने, नॉर्थ ईस्ट के आठ राज्यों में चलने वाली गैस ग्रिड परियोजना के लिए करीब-करीब 9 हजार करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं।

साथियों, इन्फ्रास्ट्रक्चर सिर्फ सीमेंट और कंक्रीट का जंगल नहीं होता। इसका मानवीय प्रभाव है और इससे लोगों को ऐसा लगता है कि कोई उनकी परवाह करता है। जब बोगीबील पुल जैसे दशकों से लटके अनेक प्रोजेक्ट पूरे होने से लाखों लोगों को कनेक्टिविटी मिलती है, तब उनका सरकार पर विश्वास बढ़ता है। भरोसा बढ़ता है, यही वजह है कि विकास के चौतरफा हो रहे कार्यों ने अलगाव को लगाव में बदलने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है अब अलगाव नहीं, सिर्फ लगाव और जब लगाव होता है। जब लगाव

होता है, जब प्रगति सभी के लिए समान रूप से पहुंचने लगती है, तो लोग एक साथ काम करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। जब लोग एक साथ काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं, तो बड़े से बड़े मुद्दे भी हल हो जाते हैं।

साथियों, ऐसा ही एक मुद्दा है ब्रू-रियांग जनजातियों के पुनर्वास का। कुछ दिन पहले ही त्रिपुरा और मिज़ोरम के बीच अधर में जीने के लिए मजबूर ब्रू-रियांग जनजातियों के पुनर्वास का ऐतिहासिक समझौता हुआ है। करीब ढाई दशक बाद हुए इस समझौते से हजारों परिवारों को अब अपना स्थाई घर, स्थाई पता मिलना निश्चित हुआ है। ब्रू-रियांग जनजातीय समाज के इन साथियों को ठीक से बसाने के लिए सरकार द्वारा एक विशेष पैकेज दिया जाएगा।

साथियों, आज देश में हमारी सरकार की ईमानदार कोशिशों की वजह से ये भावना विकसित हुई है कि सबके साथ में ही देश का हित है। इसी भावना से, कुछ दिन पहले ही गुवाहाटी में 8 अलग-अलग गुटों के लगभग साढ़े 6 सौ कैडर्स उन्होंने हिंसा का रास्ता छोड़ करके शांति का रास्ता चुना है। इन कैडर्स ने आधुनिक हथियार, बड़ी मात्रा में विस्फोटक और गोलियों के साथ अपने आपको सरेंडर कर दिया। अहिंसा को सरेंडर कर दिया। अब इन्हें केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं के तहत rehabilitate किया जा रहा है।

साथियों, पिछले साल ही नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा और सरकार के बीच एक समझौता हुआ और मैं समझता हूं कि समझौता भी बहुत महत्वपूर्ण कदम था। NLFT पर 1997 से ही प्रतिबंध लगा हुआ था। बरसों तक ये संगठन हिंसा का मार्ग अपनाता रहा था। हमारी सरकार ने वर्ष 2015 में NLFT से बातचीत करना शुरू की थी। उनको विश्वास में लेने का प्रयास किया। बीच में कुछ लोगों को रखकर के मदद ली। इसके कुछ समय बाद ये लोग भी जो बम-बंदूक, पिस्तौल में ही विश्वास रखते थे... सब कुछ छोड़ दिया और हिंसा फैलानी बंद कर दी थी। निरंतर प्रयास के बाद पिछले साल 10 अगस्त को हुए समझौते के बाद ये संगठन हथियार छोड़ने और भारत के संविधान का पालन करने के लिए तैयार हो गया, मुख्यधारा में आ गए। इस समझौते के बाद NLFT के दर्जनों कैडर्स ने आत्मसमर्पण कर दिया था।

भाइयों और बहनों, वोट के लिए, राजनीतिक हित के लिए मुद्दों को, मुश्किलों को बनाए रखने और उनको टालते रहने का एक बड़ा नुकसान असम और नॉर्थ ईस्ट को हुआ है, देश को हुआ है।

साथियों, रोड़े अटकाने की, रूकावट डालने की असुविधा पैदा करने की इस राजनीति के माध्यम से देश के विरुद्ध काम करने वाली एक मानसिकता पैदा की जा रही है। जो विचार, जो प्रवृत्ति, जो राजनीति ऐसी मानसिकता को प्रोत्साहित करती है। ऐसे लोग न तो भारत को जानते हैं, और न ही असम को समझते हैं। असम का भारत से जुड़ाव दिल से है, आत्मा से है। असम श्रीमंत शंकरदेव जी की संस्कारों को जीता है। श्रीमंत शंकरदेव जी जी कहते हैं-

**कोटि-कोटि जन्मांतरे जाहार, कोटि-कोटि जन्मांतरे जाहार**

**आसे महा पुण्य राशि, सि सि कदाचित मनुष्य होवय, भारत वरिषे आसि !!**

यानि जिस व्यक्ति ने अनेक जन्मों से निरंतर पुण्य कमाया है, वही व्यक्ति इस भारत देश में जन्म लेता है। ये भावना असम के कोने-कोने में, असम के कण-कण में, असम के जन-जन में है। इसी भावना के चलते भारत के स्वतंत्रता संघर्ष से लेकर भारत के नवनिर्माण में असम ने अपना खून और पसीना बहाया है। ये भूमि आज़ादी के लिए त्याग-तपस्या करने वालों की भूमि है। मैं आज असम के हर साथी को ये आश्वस्त करने आया हूं, कि असम विरोधी, देश विरोधी हर मानसिकता को, इसके समर्थकों को, देश न बर्दाश्त करेगा, न कभी देश माफ करेगा।

साथियों, यही ताकतें हैं जो पूरी ताकत से असम और नॉर्थ ईस्ट में भी अफवाहें फैला रही हैं कि सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट - CAA से यहां, बाहर के लोग आ जाएंगे, बाहर से लोग आकर बस जाएंगे। मैं असम के लोगों को आश्वस्त करता हूं कि ऐसा भी कुछ भी नहीं होगा।

भाइयों और बहनों, मैंने असम में लंबे समय तक यहां के लोगों के बीच में एक सामान्य भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में काम किया है। छोटे-छोटे इलाकों में मैंने दौरा किया हुआ है और अपने प्रवास के दौरान जब अपने साथियों के साथ बैठता था, चलते जाते, तो हमेशा भारत रत्न भूपेन हजारिका जी के लोकप्रिय गीत की पंक्तियां मैं यहां के साथियों से अक्सर सुनता था। और भूपेन हजारिका मेरा कुछ विशेष लगाव भी है उनके साथ। उसका कारण है कि मेरा जन्म गुजरात में हुआ। और भूपेन हजारिका भारत रत्न भूपेन हजारिका मेरे गुजरात के दामाद हैं। इसका भी हमें गर्व है। और उनके बेटे, उनके बच्चे आज भी गुजराती बोलते हैं और इसलिए गर्व होता है। और जब मैं सुनता था कि....

**गोटई जीबोन बिसारिलेउ, अलेख दिवख राती,**

**अहम देहर दरे नेपाऊं, इमान रहाल माटी ।।**

असम जैसा प्रदेश, असम जैसी माटी, यहां के लोगों जितना अपनापन मिलना वाकई अपने आप में बड़े भाग्य की बात है। मुझे पता है कि यहां के अलग-अलग समाज के लोग, संस्कृति, भाषा-भूषा, खान-पान कितने समृद्ध हैं। आपकी Aspirations, आपके सुख-दुख, हर बात की भी मुझे पूरी जानकारी है। जिस प्रकार आपने सारे भ्रम समाप्त कर, सारी मांगें समाप्त कर, बोडो समाज से जुड़े साथी साथ आए हैं, मुझे उम्मीद है कि अन्य लोगों के भी सारे भ्रम बहुत जल्द खत्म हो जाएंगे।

साथियों, बीते 5 वर्ष में भारत के इतिहास और वर्तमान में असम के योगदान को पूरे देश में पहुंचाने का काम हुआ है। पहली बार राष्ट्रीय मीडिया में असम सहित पूरे नॉर्थ ईस्ट की कला-संस्कृति, यहां के युवा टैलेंट, यहां के Sporting Culture को पूरे देश और दुनिया में प्रमोट किया गया है। आपका स्नेह, आपका आशीर्वाद, मुझे निरंतर आपके हित में काम के लिए प्रेरित करता रहेगा। ये आशीर्वाद कभी बेकार नहीं जाएंगे क्योंकि आपके आशीर्वाद की ताकत तो बहुत बड़ी है। आप अपने सामर्थ्य पर विश्वास रखें, अपने इस साथी पर विश्वास रखें और मां कामाख्या की कृपा पर विश्वास रखें। मां कामाख्या की आस्था और आशीर्वाद हमें विकास की नई ऊंचाइयों की ले जाएगा।

साथियों, गीता में भगवान कृष्ण ने, पांडवों से कहा था और बहुत बड़ी महत्वपूर्ण बात और वो भी युद्ध की भूमि में कहा था, हाथ में शस्त्र थे, शस्त्र और अस्त्र चल रहे थे। उस युद्ध की भूमि से भगवान श्री कृष्ण ने कहा था, गीता में कहा है कि-

**निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।**

यानि किसी भी प्राणी से वैर न रखने वाला व्यक्ति ही मेरा है।

सोचिए, महाभारत के उस ऐतिहासिक युद्ध में भी भगवान कृष्ण का यही संदेश था- किसी से बैर मत करो, किसी से दुश्मनी मत करो।

देश में बैर-भाव की थोड़ी सी भी भावना लिए व्यक्ति से मैं यही कहूंगा कि बैर की भावना छोड़िए, दुश्मनी की भावना छोड़िए।

आप विकास की मुख्यधारा में आइए, सबके साथ से, सबका विकास करिए। हिंसा से न कभी कुछ हासिल हुआ है, न कभी आगे भी हासिल होने की संभावना है।

साथियों, एक बार फिर बोड़ो साथियों को, असम और नॉर्थ ईस्ट को मैं आज बहुत बहुत बधाई देता हूँ। और शुभकामनाओं के साथ फिर एक बार ये विशाल जन सागर, ये दृश्य जीवन में मैं नहीं जानता हूँ की देखने को मिलेगा या नहीं मिलेगा, ये संभव ही नहीं लगता है। शायद हिंदुस्तान के किसी राजनेता को ऐसा आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य न पहले मिलेगा न भविष्य में मिलेगा कि नहीं मिलेगा मैं कह नहीं सकता। मैं अपने आपको बहुत बड़ा भाग्यवान मानता हूँ। आप इतना प्यार इतना आशीर्वाद बरसा रहे हैं।

यही आशीर्वाद यही प्रेम मेरी प्रेरणा है। यही मुझे देश के लिए आपके लिए दिन रात कुछ न कुछ करने रहने की ताकत देता है। मैं आप लोगो का जितना आभार व्यक्त करूँ, आप लोगो का जितना अभिनन्दन करूँ, उतना कम है। अब फिर एक बार अहिंसा का रास्ता चुनने के लिए शस्त्रों को छोड़ने के लिए, ये जो नौजवान आगे आए हैं। आप विश्वास रखें आपके नए जीवन की शुरुआत हो चुकी है। पूरे देश के आशीर्वाद आप पर है। 130 करोड़ देशवासियों का आशीर्वाद आप पर है। और मैं North East में, नक्सल इलाके में, जम्मू कश्मीर में अभी भी जिनका बंदूक में, गन में पिस्तौल में अभी भी भरोसा है, उनको मैं कहता हूँ आइये मेरे बोड़ो के नौजवानो से कुछ सीखिए। मेरे बोड़ो के नौजवानो से प्रेरणा लीजिये लौट आइये, वापिस लौट आइये, मुख्य धारा में आइए, जीवन जी कर के जिंदगी का जश्न मनाइए इसी एक अपेक्षा के साथ फिर एक बार इस धरती को प्रणाम करते हुए, इस धरती के लिए जीने वाले ऐसे महापुरुषों को प्रणाम करते हुए आप सबको वंदन करते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूँ, मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!!

भारत माता की जय....

पूरी ताकत से बोलिए, 130 करोड़ देशवासियों के दिलों को छू जाए ऐसी आवाज निकालिए....

भारत माता की जय....

भारत माता की जय....

भारत माता की जय....

भारत माता की जय....

भारत माता की जय....

महात्मा गांधी अमर रहे, अमर रहे

महात्मा गांधी अमर रहे, अमर रहे

महात्मा गांधी अमर रहे, अमर रहे

बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।

\*\*\*\*\*

## **वीआरआरके/वीजे/बीएम/एसएस/एमएस**

(रिलीज़ आईडी: 1602486) आगंतुक पटल : 467

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Urdu , Marathi , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu



प्रधानमंत्री कार्यालय

# हिमाचल प्रदेश की सोलंग घाटी में आयोजित जनसभा में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 03 OCT 2020 5:07PM by PIB Delhi

केंद्रीय मंत्रिपरिषद के मेरे सहयोगी श्रीमान राजनाथ सिंह जी, हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री भाई जयराम ठाकुर जी, हिमाचल से ही सांसद और केंद्र में मंत्री मेरे साथी, हिमाचल का छोकरा श्री अनुराग ठाकुर जी, स्थानीय विधायक, सांसदगण और हिमाचल सरकार में मंत्री भाई गोविंद ठाकुर जी, अन्य मंत्रीगण, अन्य सांसदगण, विधायकगण, बहनों और भाइयों।

तुसा सेभी रे, अपने प्यारे अटल बिहारी बाजपेयी जी री सोचा रै बदौलत,

कुल्लु, लाहुल, लेह-लद्दाखा रे लोका री तैंयी ऐ सुरंगा रा तौहफा, तुसा सेभी वे मेलू।

तुसा सेभी वै बहुत-बहुत बधायी होर मुबारक।

मां हिडम्बा की, ऋषि-मुनियों की तपस्थली जहां 18 करडू यानी गांव-गांव देवताओं की जीवंत और अनूठी परम्परा है, ऐसी दिव्य धरा को मैं प्रणाम करता हूं, नमन करता हूं। और कंचननाग की ये भूमि, अभी जयराम जी हमारे मुख्यमंत्री जी वर्णन कर रहे थे पैराग्लाइडिंग के मेरे इस शौक का। अच्छा तो लगता था उड़ने का लेकिन जब पूरी किट उठा करके ऊपर तक जाना पड़ता था तो दम उखड़ जाता था। और एक बार शायद दुनिया में और किसी ने किया होगा कि नहीं मुझे मालूम नहीं। अटल जी मनाली आए थे, मैं यहां संगठन की व्यवस्था वाला व्यक्ति था तो थोड़ा पहले आया था। तो हमने एक कार्यक्रम बनाया। 11 पैराग्लाइडर्स, पायलट्स एक साथ मनाली के आसमान में, और जब अटल जी पहुंचे तो सबने पुष्प वर्षा की थी। शायद दुनिया में पैराग्लाइडिंग का ऐसा उपयोग पहले कभी नहीं हुआ होगा। लेकिन जब शाम को मैं अटल जी से मिलने गया तो कह रहे, भाई बहुत साहस कर रहे हो, ऐसा क्यों करते हो। लेकिन वो दिन मेरे मनाली के जीवन में भी एक बड़ा सही अवसर बन गया था कि पैराग्लाइडिंग से पुष्प वर्षा करके वाजपेयी जी के स्वागत करने की कल्पना बहुत ही रोचक थी।

हिमाचल के मेरे प्यारे भाइयों, बहनों आप सभी को अटल टनल लोकार्पण की भी आज बहुत-बहुत बधाई है। और जैसा मैंने पहले कहा इस जगह भले ही आज सभा हो रही हो और मैं तो देख रहा हूं सोशल डिस्टेंसिंग का परफेक्ट प्लानिंग हुआ है। दूर-दूर तक सब बराबर सोशल डिस्टेंसिंग करके और अपना हाथ भी उठा करके मुझे आज उन सबका भी अभिवादन करने का अवसर मिला है। ये जगह मेरी जानी-पहचानी जगह है। वैसे मैं एक जगह पर ज्यादा समय रुकने वाला व्यक्ति नहीं होता था बहुत तेजी से दौरा करता था। लेकिन जब अटल जी आते थे तो जितने दिन रुकते थे, मैं भी रुक जाता था, तो मुझे भी यहां काफी निकटता का अनुभव आप सबसे होता था। अब, तब उनके साथ मनाली के, हिमाचल के विकास को लेकर कई बार चर्चा होती थी।

अटल जी यहां के इंफ्रास्ट्रक्चर, यहां की कनेक्टिविटी और यहां के पर्यटन उद्योग की खासी चिंता भी करते थे।

वो अक्सर अपनी एक मशहूर कविता सुनाया करते थे। मनाली वालों ने तो जरूर बार-बार सुनी है और सोचिए, जिन्हें ये जगह अपने घर जैसी लगती हो, जिन्हें परिणि गांव में समय बिताना इतना अच्छा लगता हो, जो यहां के लोगों से इतना प्रेम करते हों, वही अटल जी कहते थे, अपनी कविता में वो कहते थे-

मनाली मत जइयो,  
 राजा के राज में।  
 जइयो तो जइयो,  
 उड़िके मत जइयो,  
 अधर में लटकीहों,  
 वायुदूत के जहाज़ में।  
 जइयो तो जइयो,  
 सन्देश न पड़यो,  
 टेलिफोन बिगड़े हैं,  
 मिर्धा महाराज में।

साथियों,

मनाली को बहुत अधिक पसंद करने वाले अटल जी की ये अटल इच्छा थी, कि यहां स्थितियां बदलें, यहां की कनेक्टिविटी बेहतर हो। इसी सोच के साथ उन्होंने रोहतांग में टनल बनाने का फैसला लिया था।

मुझे खुशी है कि आज अटल जी का ये संकल्प सिद्ध हो गया है। ये अटल टनल अपने ऊपर भले ही इतने बड़े पहाड़ का (यानी करीब 2 किलोमीटर ऊंचा पहाड़ उस टनल के ऊपर है) बोझ उठाए है। जो बोझ कभी लाहौल-स्पीति और मनाली के लोग अपने कंधे पर उठाते थे, इतना बड़ा बोझ आज उस टनल ने उठाया है और उस टनल ने यहां के नागरिकों को एक प्रकार से बोझ मुक्त कर दिया है। सामान्य लोगों का एक बड़ा बोझ कम होना, उनका लाहौल-स्पीति आना-जाना बहुत आसान होना अपने आप में संतोष की, गौरव की, आनंद की बात है।

अब वो दिन भी दूर नहीं जब ट्रिस्ट कुल्लू-मनाली से सिड्डु घाटी का नाश्ता करके निकलेंगे और लाहौल में जाकर 'दू-मार' और 'चिलड़े' का लंच कर पाएंगे। ये पहले संभव नहीं था।

ठीक है, कोरोना है, लेकिन अब धीरे-धीरे देश अनलॉक भी तो हो रहा है। मुझे उम्मीद है, अब देश के अन्य सेक्टरों की तरह ट्रिज्म भी धीरे-धीरे गति पकड़ लेगा और बड़े शान से कुल्लू के दशहरे की तैयारी तो चलती ही चलती होगी।

साथियों,

अटल टनल के साथ-साथ हिमाचल के लोगों के लिए एक और बड़ा फैसला लिया गया है। हमीरपुर में 66 मेगावाट के धौलासिद्ध हाइड्रो प्रोजेक्ट को स्वीकृति दे दी गई है। इस प्रोजेक्ट से देश को बिजली तो मिलेगी ही, हिमाचल के अनेकों युवाओं को रोजगार भी मिलेगा।

साथियों,

आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण का जो अभियान पूरे देश में चल रहा है, उसमें बहुत बड़ी भागीदारी हिमाचल प्रदेश की भी है। हिमाचल में ग्रामीण सड़कें हों, हाइवे हों, पावर प्रोजेक्ट्स हों, रेल कनेक्टिविटी हो, हवाई कनेक्टिविटी हो, इसके लिए अनेक परियोजनाओं पर तेजी से काम हो रहा है।

चाहे कीरतपुर-कुल्लू-मनाली रोड कॉरिडोर हो, जीरकपुर-परवानु-सोलन-कैथलीघाट कॉरिडोर हो, नांगलडैम-तलवाड़ा रेल रूट हो, भानूपल्ली-बिलासपुर बेरी रेल रूट हो, सभी पर तेज गति से काम जारी है। प्रयास यही है कि ये प्रोजेक्ट्स जल्द से जल्द पूरे होकर हिमाचल के लोगों की सेवा करना शुरू करें।

साथियों,

हिमाचल प्रदेश के लोगों का जीवन आसान बनाने के लिए सड़क, बिजली जैसी मूल ज़रूरतों के साथ-साथ मोबाइल और इंटरनेट कनेक्टिविटी भी बहुत ज़रूरी है। और जो tourist destination होते हैं वहां पर आजकल ये बहुत बड़ी requirement बन गया है। पहाड़ी प्रदेश होने के कारण हिमाचल के अनेक स्थानों पर नेटवर्क की समस्या होती रहती है। इसका स्थायी समाधान करने के लिए हाल में देश के 6 लाख गांवों में ऑप्टिकल फाइबर बिछाने का काम शुरू किया गया है। आने वाले 1 हजार दिनों में ये काम मिशन मोड पर पूरा किया जाना है। इसके तहत गांव-गांव में Wi-Fi Hotspot भी लगेंगे और घरों को इंटरनेट कनेक्शन भी मिल पाएंगे। इससे हिमाचल प्रदेश के बच्चों की पढ़ाई, मरीजों की दवाई और टूरिज्म से कमाई, हर प्रकार से लाभ होने वाला है।

साथियों,

सरकार का निरंतर ये प्रयास है कि सामान्य मानव की परेशानी कैसे कम हो और उसे, उसके हक का पूरा लाभ कैसे मिले और इसके लिए करीब-करीब सभी सरकारी सेवाओं का डिजिटलीकरण कर दिया गया है। अब सैलरी, पेंशन जैसी अनेक सुविधाओं के लिए बार-बार दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने पड़ते।

पहले हिमाचल के दूर-सुदूर क्षेत्रों से सिर्फ दस्तावेज़ के अटेस्टेशन के लिए हमारे युवा साथी, रिटायर्ड लोग, अफसरों और नेताओं के चक्कर काटते रहते थे। अब दस्तावेज़ों के अटेस्टेशन की ज़रूरत को भी एक प्रकार से खत्म कर दिया है।

आप याद करिए, पहले बिजली और टेलिफोन के बिल भरने के लिए पूरा दिन लग जाता था। आज ये काम आप घर बैठे एक क्लिक पर अंगुली दबा करके कर पा रहे हैं। अब बैंक से जुड़ी अनेक सेवाएं, जो बैंक में जाकर ही मिलती थीं, वो भी अब घर बैठे ही मिलने लगी हैं।

साथियों,

ऐसे अनेक सुधारों से समय की भी बचत हो रही है, पैसा भी बच रहा है और करप्शन के लिए स्कोप समाप्त हुआ है। कोरोना काल में ही हिमाचल प्रदेश के 5 लाख से ज्यादा पेंशनर और लगभग 6 लाख बहनों के जनधन खाते में सैकड़ों करोड़ रुपए एक क्लिक में जमा किए गए हैं। सवा लाख से ज्यादा गरीब बहनों को उज्ज्वला का मुफ्त सिलेंडर मिल पाया है।

साथियों,

देश में आज जो सुधार किए जा रहे हैं, उन्होंने ऐसे लोगों को परेशान कर दिया है जिन्होंने हमेशा सिर्फ अपने राजनीतिक हितों के लिए काम किया। सदी बदल गई लेकिन उनकी सोच नहीं बदली। अब सदी बदल गई है सोच भी बदलनी है और नई सदी के हिसाब से देश को भी बदल करके बनाना है। आज

जब ऐसे लोगों द्वारा बनाए बिचौलियों और दलालों के तंत्र पर प्रहार हो रहा है, तो वो बौखला गए हैं। बिचौलियों को बढ़ावा देने वालों ने देश के किसानों की स्थिति क्या कर दी थी, ये हिमाचल के लोग भी भली-भांति जानते हैं।

ये आपको भी पता है कि हिमाचल देश के सबसे बड़े फल उत्पादक राज्यों में से एक है। यहां के टमाटर, मशरूम जैसी सब्जियां भी अनेक शहरों की ज़रूरतों को पूरा करती हैं। लेकिन स्थिति क्या रही है? कुल्लू का, शिमला का या किन्नौर का जो सेब किसान के बाग से 40-50 रुपए किलो के हिसाब से निकलता है, वो दिल्ली में रहने वालों के घरों में करीब-करीब 100-150 रुपए तक पहुंचता है। बीच का लगभग 100 रुपए का जो हिसाब है, ना तो कभी किसान को मिला और ना कभी वो खरीदार को मिला, तो वो गया कहां? किसान का भी नुकसान और शहर में ले करके खरीद करने वाले का भी नुकसान। यही नहीं, यहां के बागवान साथी जानते हैं कि सेब का सीज़न जैसे-जैसे पीक पर जाता है, तो कीमतें धड़ाम से गिर जाती हैं। इसमें सबसे अधिक मार ऐसे किसानों पर पड़ती है, जिनके पास छोटे बगीचे हैं।

साथियों,

कृषि सुधार कानूनों का विरोध करने वाले कहते हैं कि यथास्थिति बनाए रखो, पिछली सदी में जीना है जीने दो, लेकिन देश आज परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध है। और इसलिए ही कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कानूनों में ऐतिहासिक सुधार किया गया है। और ये जो सुधार हैं वो उन्होंने भी पहले सोचे थे, वे भी जानते थे, सोच तो उनकी भी थी, हमारी भी, लेकिन उनमें हिम्मत की कमी थी, हमारे में हिम्मत है। उनके लिए चुनाव सामने थे, हमारे लिए देश सामने है, हमारे लिए हमारा देश का किसान सामने है, हमारे लिए हमारे देश के किसान का उज्ज्वल भविष्य सामने है और इसलिए हम फैसले ले करके आगे किसान को ले जाना चाहते हैं।

अब अगर हिमाचल के छोटे-छोटे बागवान, किसान समूह बनाकर अपने सेब दूसरे राज्यों में जाकर सीधे बेचना चाहे, तो उन्हें वो आजादी मिल गई है। हां अगर उनको स्थानीय मंडी में फायदा मिलता है, पहले की व्यवस्था से फायदा मिलता है तो वो विकल्प तो है ही, उसको किसी ने खत्म नहीं किया है। यानी हर प्रकार से किसानों-बागवानों को लाभ पहुंचाने के लिए ही ये सुधार किए गए हैं।

साथियों,

केंद्र सरकार किसानों की आय बढ़ाने, खेती से जुड़ी उनकी छोटी-छोटी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत देश के लगभग सवा 10 करोड़ किसान, उन परिवारों के खाते में अब तक करीब 1 लाख करोड़ रुपए जमा किया जा चुका है। इसमें हिमाचल के सवा 9 लाख किसान परिवारों के बैंक खाते में भी लगभग 1000 करोड़ रुपए जमा किए गए हैं।

कल्पना कीजिए अगर पहले की सरकारों के समय 1000 करोड़ रुपए का कोई पैकेज हिमाचल के लिए घोषित होता तो वो पैसा पता नहीं कहां-कहां, किस-किस की जेब में पहुंच जाता? उस पर राजनीतिक श्रेय लेने की कितनी कोशिशें होतीं? लेकिन यहां छोटे किसानों के खाते में ये रुपए चले गए और कोई हो-हल्ला नहीं हुआ।

साथियों,

हाल ही एक और बड़ा रिफॉर्म देश में हमारी श्रमशक्ति को, विशेष तौर पर बहनों और बेटियों को अधिकार देने के लिए किया गया है। हिमाचल की बहनें और बेटियां तो वैसे भी हर क्षेत्र में, मुश्किल से मुश्किल काम करने में अग्रणी रहती हैं। लेकिन अभी तक स्थिति ये थी कि देश में अनेक सेक्टर ऐसे

थे, जिनमें बहनों को काम करने की मनाही थी। हाल में जो श्रम कानूनों में सुधार किया गया है, उनसे अब महिलाओं को भी वेतन से लेकर काम तक के वो सभी अधिकार दे दिए गए हैं, जो पुरुषों के पास पहले से हैं।

साथियों,

देश के हर क्षेत्र, हर नागरिक, के आत्मविश्वास को जगाने के लिए, आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए, सुधारों का सिलसिला लगातार चलता रहेगा। पिछली शताब्दी के नियम-कानूनों से अगली शताब्दी में नहीं पहुंच सकते। समाज और व्यवस्थाओं में सार्थक बदलाव के विरोधी जितनी भी अपने स्वार्थ की राजनीति कर लें, ये देश रुकने वाला नहीं है।

हिमाचल, यहां के हमारे नौजवान, देश के हर-हर युवा के सपने और आकांक्षाएं, हमारे लिए सर्वोपरि हैं। और उसी संभावनाओं को ले करके हम देश को प्रगति की नई उंचाइयों पर ले जाने पर लगे रहेंगे।

साथियो,

मैं आज फिर एक बार अटल टनल के लिए, और आप कल्पना कर सकते हैं इससे कितना बड़ा बदलाव आने वाला है। कितनी संभावनाओं के दरवाजे खुल गए हैं। उसका जितना फायदा हम उठाएं।

मेरी आप सबको बहुत-बहुत बधाई है। बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

कोरोना का काल है, हिमाचल ने स्थितियों को बहुत अच्छे ढंग से संभाला है। लेकिन फिर भी इस संक्रमण से खुद को सुरक्षित रखें।

देवधरा को प्रणाम करते हुए, कंचननाग जी की इस धरा को प्रणाम करते हुए, आप सबको फिर से एक बार मिलने का, दर्शन करने का मौका मिला। अच्छा होता कि कोरोना का काल न होता तो बड़े प्यार से आप लोगों से मिलता, काफी चेहरे परिचित मेरे सामने हैं। लेकिन आज ये स्थिति है कि नहीं मिल पा रहा हूं, लेकिन आपके दर्शन का मुझे मौका मिल गया, ये भी मेरे लिए खुशी की बात है। मुझे यहां से तुरंत निकलना है, इसलिए आप सबकी इजाजत लेते हुए, आपको बधाई देते हुए

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*

**वीआरआरके/एमजी/एम/एसके**

(रिलीज़ आईडी: 1661434) आगंतुक पटल : 186

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Manipuri , Bengali , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam